CBSE Test Paper 03

Ch-6 नौबतखाने में इबादत

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है। यह आयोजन पिछले कई बरसों से संकट मोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित हैं व हनुमान जयन्ती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन-वादन की उत्कृष्ट सभा होती हैं। इसमें बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं। अपने मज़हब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है।

   i. बिस्मिल्ला खाँ का वादक यंत्र कौन-सा है ?
   ii. संकट मोचन में संगीत आयोजन की क्या विशेषता है ?
   iii. काशी में किस प्राचीन परंपरा का आयोजन कहाँ होता रहा है ?

2. नौबतखाने में इबादत के लेखक ने किन विशेषताओं के आधार पर यह कहा है कि बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।

3. नौबतखाने में इबादत पाठ के आधार पर उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का प्रारंभिक परिचय देते हुए बताइए कि उनमें संगीत के प्रति आसक्ति किनके गायन और संगीत को सुनकर हुई थी?

4. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

5. 'बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।''नौबतखाने में इबादत' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए।

6. जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की आसक्ति क्यों और कैसे हुई ?'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर लिखिए।

CBSE Test Paper 03
Ch-6 नौबतखाने में इबादत

Answer

1. i. बिस्मिल्ला खां वादक यन्त्र शहनाई है ।
   ii. संकट मोचन में संगीत आयोजन की विशेषता यह है कि यहाँ हनुमान जयन्ती के अवसर पर लंका स्थित मंदिर में पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन - वादन की विशेष सभा होती है।
   iii. काशी में संगीत परम्परा का आयोजन संकटमोचन मंदिर में होता रहा है।

2. पाठ 'नौबतखाने में इबादत' के लेखक के अनुसार बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे क्योंकि उनके समान संगीत की सच्ची साधना करने वाला कोई नहीं है | उनके समान निःस्वार्थ भाव से संगीत की उपासना करने वाला कोई विरला ही पैदा होगा। वे अस्सी साल तक सुरों की साधना करते रहे | अपनी सुर साधना में सदा मालिक से एक अच्छा सुर बख़्शने की फरियाद करते रहते। उन्होंने स्वयं को कभी पूर्ण नहीं माना | भारत के सर्वोच्च पुरस्कार भारतरल से सम्मानित होने पर भी बिना गुरु, बिना धन लिए संगीत को संपूर्णता और एकाधिकार के साथ उन्होंने जिंदा रखा। उनका संगीत दिलों की गहराइयों को छूता और सांप्रदायिक सद्भावना को बनाए रखने में सक्षम था। वे सदा एक ऐसे नायक के रूप में भारत की कौम में जीवित रहेंगे जो सरलता व सादगी से सफलता के शिखर पर पहुँचे। प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचने पर भी वे अहंकार रहित और दिखावे से दूर थे | वे विनम्र और शहनाई के क्षेत्र के बेताज बादशाह थे और सदा रहेंगे।

3. उस्ताद बिस्मिल्ला खां का नाम बचपन में अमीरुद्दीन था | इनके पिता पैगंबरबख्श और माता का नाम मिट्ठन था | इनका जन्म बिहार में सोन नदी के किनारे डुमरांव नामक स्थान पर हुआ था | 6 वर्ष की अवस्था में ये अपने ननिहाल काशी आ गए थे | उनके मामा सादिक हुसैन तथा अलीबख्श देश के जाने-माने शहनाई वादक थे। 14 वर्ष की अवस्था में ही बिस्मिल्ला खाँ बालाजी मन्दिर के नौबतखाने में रियाज़ के लिए जाते थे। उनमें संगीत के प्रति आसक्ति उन्हें रसूलनबाई और बतूलनबाई के गाने सुनकर हुई थी। वे जब रियाज़ के लिए बालाजी मंदिर जाते तो रसूलनबाई और बतूलनबाई के रास्ते से होकर जाते। उनके ठुमरी, ठप्पे, दादरा और गीत सुनकर अमीरुद्दीन को बेहद खुशी मिलती थी।

4. काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिला खाँ को व्यथित करते थे -

   i. वहाँ खानपान में बदलाव आ गया | अब देसी घी की कचौड़ी और जलेबी में पहले जैसी बात ही नहीं रही।
   ii. पुरानी परंपराएं धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही थी।
   iii. काशी में पहले सभी सद्भाव और प्रेम से रहते थे किंतु समय के साथ उनके सांप्रदायिक स्वभाव में कमी आने लगी।
   iv. काशी में पहले की अपेक्षा संगतकारों को कम महत्व दिया जाने लगा जिससे रियाज़ में भी कमी आने लगी।
   v. संगीत, साहित्य और अदब की बहुत साड़ी परम्पराएँ लुप्त हो गईं |

5. बिस्मिल्ला खां अपनी शहनाई कला के प्रति पूर्णतः समर्पित थे | उनमें जैसे खुदा से सच्चे सुर को पाने का जुनून था |

अपने पाँचों वक्त की नमाज़ में वह खुदा से यही मांगते थे कि उनके सुरों को खुदा इतना अधिक प्रभावशाली बना दे कि उसे सुनकर लोगों की आँखों से मोती के रूप में आँसू निकल आए | वे अपने सुरों को कभी भी पूर्ण नहीं मानते थे इसलिए उन्हें पूरा करने के लिए वे घंटों अनथक रियाज़ करते रहते थे | संगीत की सम्पूर्णता और एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा उनके अन्दर अंत तक थी |

6. जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति बिस्मिल्ला खां की संगीत के प्रति आसक्ति निम्नलिखित कारणों से हुई --

   i. रसूलन और बतूलन दोनों गायिका बहनों के गीतों को सुनकर उनके मन में संगीत के प्रति आसक्ति उत्पन्न हुई।
   ii. बालाजी मंदिर जाने का एक रास्ता इन दोनों बहनों के घर से होकर जाता, उन्हें मधुर गायकी सुनने को मिलती।